एक सिद्ध के सान्निध्य में

बाबा मुक्तानन्द से जुड़े संस्मरण

१

***

वर्ष २०१४ में बाबा जी की सौर महासमाधि की एक रात पहले मैंने एक स्वप्न देखा : मैं एक देदीप्यमान सुनहरे हॉल में प्रवेश कर रहा हूँ जहाँ बाबा जी विराजमान थे। उन्होंने सुनहरे वस्त्र पहने थे। उनके सामने एक लम्बा-सा सुनहरा क़ालीन बिछा हुआ था। उस पर चलते हुए जब मैं उनकी ओर आ रहा था तो गहरे श्रद्धाभाव की अनुभूति कर रहा था। मैंने बाबा जी के चरणों में शीश झुकाया और रोने लगा। मुझे ऐसा लगा मानो हज़ारों वर्ष बीतते जा रहे हैं और मेरे अस्तित्व के असंख्य जन्मों के कर्म कट रहे हैं। अन्ततः जब मैंने बाबा जी की ओर देखा, तो वे मधुरता से मेरी ओर देख मुस्करा रहे थे। और फिर हम दोनों हँसने लगे।

मैं इस समझ के साथ नींद से जागा कि यद्यपि मेरा जन्म बाबा जी के महासमाधि लेने के दस वर्ष बाद हुआ, फिर भी मैं सदैव उनके साथ रहा हूँ — और वे भी सदैव मेरे साथ रहे हैं।

तब से यह स्वप्न मेरे लिए एक आश्रयस्थल रहा है। जब भी मैं बाबा जी से पृथक या दूर महसूस करता हूँ तो मैं उस स्वर्णिम हॉल में वापस जाता हूँ, और पुनः उनके दर्शन प्राप्त करता हूँ।

यूटा, यू. एस. ए. से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७८ में मुझे अपनी गर्मी की छुट्टियाँ गुरुदेव सिद्धपीठ में व्यतीत करने का महासौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय बाबा जी वहीं आश्रम में थे। मेरी सेवा अन्नपूर्णा में थी — साग-सब्ज़ी काटना, भोजन परोसना व अन्नपूर्णा-हॉल को साफ़-सुथरा रखना।

एक सुबह जब मैं अन्नपूर्णा-हॉल में पोछा लगा रही थी, तभी बाबा जी हॉल में से होते हुए रसोईघर में गए। मैं पोछा लगाते-लगाते रुक गई ताकि बाबा जी वहाँ से गुज़र सकें। बाबा जी ने प्रेम भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा जैसे मेरा रुकना उन्हें अच्छा लगा हो। उस क्षण मुझमें उमंग की एक लहर दौड़ गई और मैं असीम उल्लास से भर गई।

बाबा जी की एक सहज दृष्टि ने मुझे आनन्द से ओतप्रोत कर दिया था और साधारण-सी प्रतीत होने वाली सेवा को एक असाधारण अनुभव में रूपान्तरित कर दिया था।

जब मैं इस अनुभव पर चिन्तन करती हूँ, तो पाती हूँ कि आत्मा का आनन्द तो सदैव मेरे अन्तर में मौजूद है। जब मैं सिद्धयोग के अभ्यासों को करती हूँ तथा इन अभ्यासों के प्रभावों को अपने जीवन में प्रवाहित होने देती हूँ, तो मैं इस आनन्द के अनुभव के सम्पर्क में अधिकाधिक रह पाती हूँ।

लन्दन, इंगलैन्ड से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७९ के नववर्ष की पूर्वरात्रि को मुझे बाबा जी से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई। वह बहुत शक्तिपूर्ण स्वप्न था। स्वप्न समाप्त होने पर मैं पुकारने लगी, "बाबा जी, बाबा जी — मुझे तो यह भी पता नहीं है कि प्रेम क्या है!" उन्होंने उत्तर दिया, "शऽऽऽऽ.. .. ..! यह नववर्ष समाप्त होने से पहले तुम्हें पता चल जाएगा कि प्रेम क्या है।"

अगली सुबह जब मैं जगी तो अन्तर में एक विस्तार का अनुभव कर रही थी। मेरी पूरी सत्ता में गहन शान्ति का भाव व्याप्त था। फिर भी, उस समय तक मैं यह नहीं समझ पाई थी कि मुझे शक्तिपात दीक्षा प्राप्ति हुई है। मैं तो यही सोचती रही कि बाबा जी ने जिस प्रेम के अनुभव का वचन मुझे दिया है, वे कैसे एक वर्ष के भीतर ही मुझे उस प्रेम का अनुभव देंगे जबकि मैं उसे जीवन भर खोजती आई हूँ।

और फिर २३ दिसम्बर, १९८० को — वर्ष समाप्त होने के बस आठ दिन पहले — जब मेरी बेटी का जन्म हुआ, इसके कुछ ही समय बाद मैं समझ गई कि बाबा जी के कहने का क्या अर्थ था। मैं समझ गई कि अपनी बेटी के साथ मेरे सम्बन्ध के द्वारा तथा एक माँ के रूप में जो प्रेम उसने मेरे अन्तर में जाग्रत किया, उसके माध्यम से बाबा जी मुझे प्रेम के बारे में सिखा रहे हैं।

बाबा जी की कृपा व असीम आशीर्वादों के फलस्वरूप मेरा जीवन प्रेम की एक वाटिका के रूप में खिल उठा है। मुझे बाबा जी से यह धरोहर प्राप्त हुई है। बाबा जी ने मेरे लिए जिस प्रेम को उजागर किया है, वह प्रेम मुझे साधना में सतत सम्बल प्रदान करता है।

कैलीफ़ोर्निया, यू. एस. ए. से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७६ में, अपने प्रथम शक्तिपात ध्यान-शिविर में मुझे बाबा जी से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई। तीस वर्ष बाद, सन् २००६ में मैं गुरुदेव सिद्धपीठ में 'हृदय की तीर्थयात्रा' शिविर में भाग लेने गई। एक तपती दोपहर मैं अपने कमरे में आराम कर रही थी। तब मैं एक ऐसी अवस्था में चली गई जो न निद्रा की थी, न स्वप्न की, तथा न ही कोई और चिरपरिचित अवस्था थी। तभी मझे एक झिलमिलाती धुँधली-सी आकृति दिखी। अचानक मैंने पहचाना कि वे बाबा जी हैं! मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था! पुनः बाबा जी के दर्शन पाना, अत्यन्त विस्मयकारी था! मैं विस्मयाभिभूत हो बाबा जी को देख रही थी। वे परमानन्द की मस्ती में निमग्न होकर नृत्य कर रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे हवा में तैर रहे हों और भारविहीन, समयातीत आनन्द में डूब गए हों। वहाँ और कुछ भी नहीं था, बस बाबा जी थे और उनके बारे में मेरा बोध था।

अन्ततः मेरी चेतना मेरे कमरे में वापस आई। मैं आश्चर्यचकित थी और निःसन्देह मैं यह जानती थी कि बाबा जी सिद्धलोक में हैं। गुरुकृपा मेरी चेतना को इस चैतन्यमय प्रकाश से पूरित सिद्धलोक में ले गई थी। सिद्धलोक हमारे जगत की ही तरह सत्य है, तथापि वह अधिक सूक्ष्म है और इसका स्वरूप पूर्णतः भिन्न है। विस्मय भाव से मैंने इस अनुभव की सत्यता को स्वीकार किया। मैं जानती थी कि यह अनुभव उतना ही वास्तविक है जितना कि मेरे सीने में धड़क रहा हृदय!

गुरुदेव सिद्धपीठ में उस दोपहर को मुझे यह समझ प्राप्त हुई कि गुरु-शिष्य सम्बन्ध शाश्वत तथा नित्य-उपस्थित है। यह सत्य मुझे ध्यान करने के लिए प्रेरित करता है जिससे कि मैं बार-बार अपने हृदय में बाबा जी व गुरुमाई जी के साथ जुड़ सकूँ।

मैसचूसेट्स, यू.एस. ए. से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७६ में अपनी द्वितीय विश्वयात्रा के अन्त में बाबा जी यूरोप गए। बाबा जी ने जिन देशों की यात्रा की उनमें से एक था जर्मनी; वहाँ वे जिस किले में ठहरे, वहाँ से बवेरियन पर्वतश्रेणी का दृश्य दिखता था। पूर्वकाल में इस किले में ग्रीष्मकाल के समय लोग शिकार के लिए जाया करते थे।

उस यात्रा के दौरान, एक सन्ध्या मैं बाबा जी के दर्शन करने पंक्ति में खड़ी हुई और हमेशा की तरह उन्हें प्रणाम किया। इस बार, जब मैं उन्हें प्रणाम करके उठी तो मेरी आँखें सीधे बाबा जी की आँखों से मिलीं। वह ऐसा था जैसे मैं उनके नेत्रों में से वह देख रही हूँ जो उन नेत्रों के परे है — प्रेम का एक विशाल, अथाह सागर। साथ ही मैं यह भी देख पा रही थी कि यह पूर्णतः निरपेक्ष प्रेम था। मैं जानती थी कि यदि मुझे इस सागर के साथ एक होना है — जो मैं सचमुच चाहती थी — तो मुझे अलगाव और भेद की सभी धारणाओं को छोड़ देना होगा। मुझे अपने अहम् से जुड़ी अपनी पहचान को त्यागना होगा। मेरे समक्ष जो आने वाला था, उसकी व्यापकता को देखकर मैं काँप उठी। परन्तु साथ ही, उस स्थिति की जो झलक मुझे प्रदान की गई थी, उसके हलकेपन का, अपार स्वतन्त्रता और परमानन्द का स्मरण भी मुझे था। और मुझे बाबा जी की वह सिखावनी याद आई कि जब एक नदी स्वयं को सागर में समर्पित कर देती है तो वह अपने छोटेपन को त्यागकर सागर ही बन जाती है जो अत्यन्त बलशाली और भव्य होता है।

मैं जानती थी कि यही परम सत्य है, और इसी की खोज में मैं अपना जीवन समर्पित करूँगी।

एक सिद्धयोग स्वामी

***

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।